

समग्रा शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 2

छोटा जादूगर

(जयशंकर प्रसाद (1889-1937))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

लेखक परिचय



जन्म : प्रसाद जी का जन्म काशी के एक सुप्रतिष्ठित कान्यकुब्जीय वैश्य परिवार में सन् 1889 ई. में हुआ था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

- शिक्षा : प्रसाद जी ने घर पर ही संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी और हिंदी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ, भारतीय इतिहास आदि का भी अध्ययन किया।
- साहित्यिक जीवन : उन्होंने 'कलाधर' नाम से ब्रजभाषा में कविता - लेखन के साथ ही साहित्यिक जीवन का आरंभ किया।

बाद में खड़ीबोली को अपनाया और अलग अलग विधाओं में साहित्य की रचना की।

- काव्य-रचनाएँ : उर्वशी, वनमिलन, झरना, आँसू (खंडकाव्य), प्रेमराज्य, करुणालय, महाराणा का महत्व, वनमिलन, लहर और कामायनी (महाकाव्य)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

- नाटक : सज्जन कल्याणी-परिणय, राज्यश्री, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि ।
- उपन्यास : कंकाल, तितली और इरावती (अपूर्ण)
- कहानियाँ : लगभग सत्तर कहानियाँ हैं।सहयोग, गुदड़ी के लाल, आकाश-दीप, इंद्रजाल, छोटा जादूगर, पुरस्कार, ममता आदि । उनकी प्रथम कहानी 'ग्राम' 1911 ई. में 'इंदु' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।
- मृत्यु : 1937 में आपका देहावसान हुआ ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

[1]

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था । मैं खड़ा था, उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी।

कलनाद : मधुर शब्द

मैंने पूछा- "क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?" "मैंने सब देखा। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौने पर निशाना लगाते हैं। तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौने पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं दिखा सकता हूँ।"- उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

निकम्मा : কাম নোহোৱা

प्रगल्भता : নিঃসংকোচ হৈ কথা কোৱা

मैंने पूछा-"और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे ?"

"नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सकता । टिकट लगता है।"

मैंने कहा- 'तो चला मैं वहाँ पर, तुमको लिवा चलूँ।" मैंने मन ही मन कहा-'भाई ! आज के तुम्हीं मित्र रहे।'

उसने कहा- "वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।"

मैंने उससे सहमत होकर कहा- "तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने स्वीकार-सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा- "तुम्हारे और कौन है ?“

"माँ और बाबूजी।"

"उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया ?"

"बाबूजी जेल में हैं।"

"क्यों?"

"देश के लिए।"- वह गर्व से बोला।

"और तुम्हारी माँ ?"

"वह बीमार है।"

"और तुम तमाशा देख रहे हो ?"

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा- "तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।"

तमाशा : খেল পथ्य : - স্বাস্থ্যৰ

तिरस्कार : অপমান উপযোগী আহাৰ

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

“हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी। माँजी बीमार है, इसलिए मैं नहीं गया।"

"कहाँ?“

"जेल में। जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा दारू करूँ और अपना पेट भरूँ। "

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा।

मैंने उससे कहा- "अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।" हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज ! उसका कोई गेंद खाली नहीं गया। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे ? कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिए।

लड़के ने कहा- "बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।" वह नौ-दो ग्यारह हो गया।

मैंने मन ही मन कहा- "इतनी जल्दी आँख बदल गई।"

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा - "बाबूजी !"

मैंने पूछा- "कौन?"

"मैं हूँ छोटा जादूगर।"

[2]

कलकत्ता के सुरम्य बोटानिकल उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मण्डली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला। साफ जाँघिया। और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था।

मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा — "बाबूजी नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?"

"नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।"

"फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबूजी ?"

"नहीं जी....तुमको...." क्रोध से कुछ कहने जा रहा था। श्रीमती ने कहा- "दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।" मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बन्दर घुड़कने लगा।

गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को आवश्यकता ने कितने शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

वाक्चालता : - अतिभाषी

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने-आप नाच रहे थे। मैंने कहा-"अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।"

श्रीमती ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा। मैंने कहा-"लड़के !"

"छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।"

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा-"अच्छा तुम इस रुपए से क्या करोगे ?"

"पहले भर पेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।"

मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा - 'ओह! कितना स्वार्थी हूँ! मैं उसके एक रुपए पाने पर ईर्ष्या करने लगा था न।"

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लताकुंज देखने के लिए चले। उस छोटे-से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। एकदम शान्त वातावरण था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हवड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कम्बल कांधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा- "तुम यहाँ कहाँ ?"

"मेरी माँ यही है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।" मैं

उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा- "माँ!"

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

[3]

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया था। फिर भी चलते-चलते एक बार उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था।

मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी, यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब वह जैसे स्वयं कँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षणभर के लिए स्फूर्तिमान हो गया।

रोएँ : শৰীৰৰ পাতল, সৰু, কোমল চুলি

मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा- " आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?" "माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।"- अविचल भाव से उसने कहा।

"तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए हो ?" मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दुःख का माप अपना ही साधन तो है। उसी के अनुपात से वह तुलना करता है।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी।

उसने कहा- "न क्यों आता ?"

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा- "जल्दी चलो।" मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था, किन्तु स्त्री के मुँह से "बे..." निकल कर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

मूल्यांकन



1 | बिजली कहाँ जगमगा रही थी ?

A मेले में

B सरोवर के किनारे

C कार्निवल के मैदान में

मूल्यांकन



2 श्रीमती ने छोटे जादूगर को कितने रुपए दिए ?

A पाँच

B एक

C दस